दैनिक

राष्ट्रीय प्रस्तावना

गाँव से गवर्नेन्स तक

लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद,आजमगढ़, झांसी, एटा,औरैया, अमेठी,बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर,जौनपुर,श्रावस्ती,उरई,जालौन, फिरोजाबाद,हरदोई, मथुरा,कानपुर,ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर,सिद्धार्थनगर,सन्तकबीरनगर, नोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

वर्ष : 9 अंक 238 | लखनऊ,सोमवार, 16 मार्च, 2020 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

कोरोना का कहर या दहशत का माहौल

डॉ0 भरत राज सिंह,
महानिदेशक-
तकनीकी,
स्कूल आफ मैनेजमेंट
साइंसेज, लखनऊ

वास्तव में कोरोना का कहर मुख्यतः चीन से शुरू हुआ और पूरे विश्व में जिस तेजी से फैल रहा है, यह एक चिंता का विषय है । चीन में लाखो की आबादी इससे प्रभावित हुई है और पूरी अर्थ-व्यवस्था चरमरा गई है ।लोगो को अलग-थलग कर इसके आगे न फैलाने के इंतजाम किये जा रहे है । प्रभावित लोगो को अलग अलग उपचार केंद्र में रखा जा रहा है । कई शहर को अलग कर दिए गए हैं। इसका प्रभाव केवल वरिष्ठजनो पर अधिक पड़ रहा है। आज इटली दूसरा सबसे प्रभावित देश हो गया है। अमेरिका में आपातकाल घोषित कर दिया गया है। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, ईरान और ईराक की बहुतायत संख्या इससे प्रभावित है । आज आस्ट्रेलिया में आवागमन पर प्रतिभंध लगा दिया गया है । अगले 15-दिनों तक न कोई किसी देश से आस्ट्रेलिया आ सकता है और नहीं कोई आस्ट्रेलिया से बाहर जा सकता है । ऐसे में, भारतवर्ष में जहाँ 80-90 लोगो को इससे प्रभावित होने की आशंका में उपचार केंद्रो में रोका गया है और जिनमे से 02(दो) की अभी तक म्रत्यु की सूचना अधिकारिक रूप से घोषित की गई है, जिनकी उम्र 62-76 वर्ष थी । परन्तु भारतवर्ष में, स्कूल / कालेजो को, कंही-कंही 31 मार्च 2020 तक और उत्तर-प्रदेश में प्रथम चरण में 22 मार्च 2020 तक बंद कर दिया गया है । आज जहाँ देश की अर्थ-व्यवस्था पहले से चरमराई हुई है, वहां पर बंदी के इस माहौल में भारतवर्ष कितने पीछे जा सकता है, शायद अभी लोगो द्वारा अनुमान नहीं लगाया जा सका है ।

मेरा स्वयं का मानना है कि हमें दहसत के इस माहौल को खतम करने का प्रयास करना चाहिए ।हां, जो लोग विदेश से भारतवर्ष आ रहे हैं, उनके कोरोना प्रभावित होने की पुष्टि और प्रभावित पाए जाने की दशा में उनकी देख-रेख हेतु उन्हें स्वास्थ्य केंद्र में रोकने व ठीक होने तक बने रहने की व्यवस्था आवश्यक होनी चाहिए। परन्तु जो भारतीय अपने देश में ही अपने कारोबार व नौकरी हेतु भ्रमण कर रहे है, उनमें पैदा हो रही दहशत को खतम करने की आवश्यकता है । कार्यालय, शिक्षण संस्थाओ और व्यापार-स्थलों को प्रतिबंधित करना, देश में नहीं है बल्कि इसे दहसत पैदा करने की श्रेणी में रखा जाना चाहिए और अर्थव्यवस्था को चोट पहुँचाने से कम नहीं आका जाना चाहिए । आज जरुरत है, कोरोना प्रभावित-देशो की मदद करने की, परन्तु अपने देश की चरमराई अर्थ-व्यवस्था की गम्भीरता को ध्यान में रखकर । एक तरफ, बाजार से धीरे-धीरे खाद्यान-सामाग्री भी अधिक दरो पर बिकने लगी है, सब्जिया का दाम बढ़ता जा रहा है, व्यापार ठप हो रहा है वही दूसरे तरफ प्रकृति की मार किसानो पर पहाड़ बनकर टूट पड़ी है ।

आज जब गेहूं आदि अन्न की फसले तैयार होने के कगार पर थी, वहीं तूफानी वरसात और ओला-वृष्टि ने किसानो की कमर तोड़ रखी है और ऐसी स्थिति अभी पूरे मार्च ही क्या, अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक बने रहने से नकारा नहीं जा सकता है ।
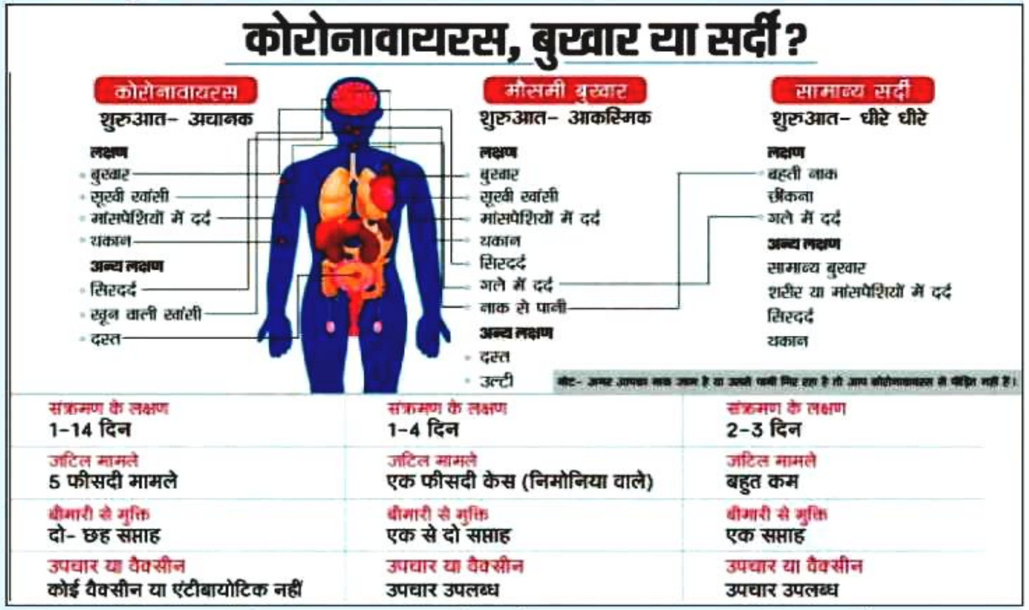
आज कोरोना से लड़ना है - परन्तु अफवाहों से दूर रहकर तथा प्राथमिक सावधानी को अपनाते हुए । वही वरिष्ठजनो को विशेष रूप से देख-भाल करने की भी आवश्यकता है ।